हैरिएट टबमैन

लेखन: पॉली कार्टर

चित्र: ब्रायन पिंकने

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

हैरिएट टबमैन

लेखन: पॉली कार्टर

चित्र: ब्रायन पिंकने

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

हैरिएट टबमैन
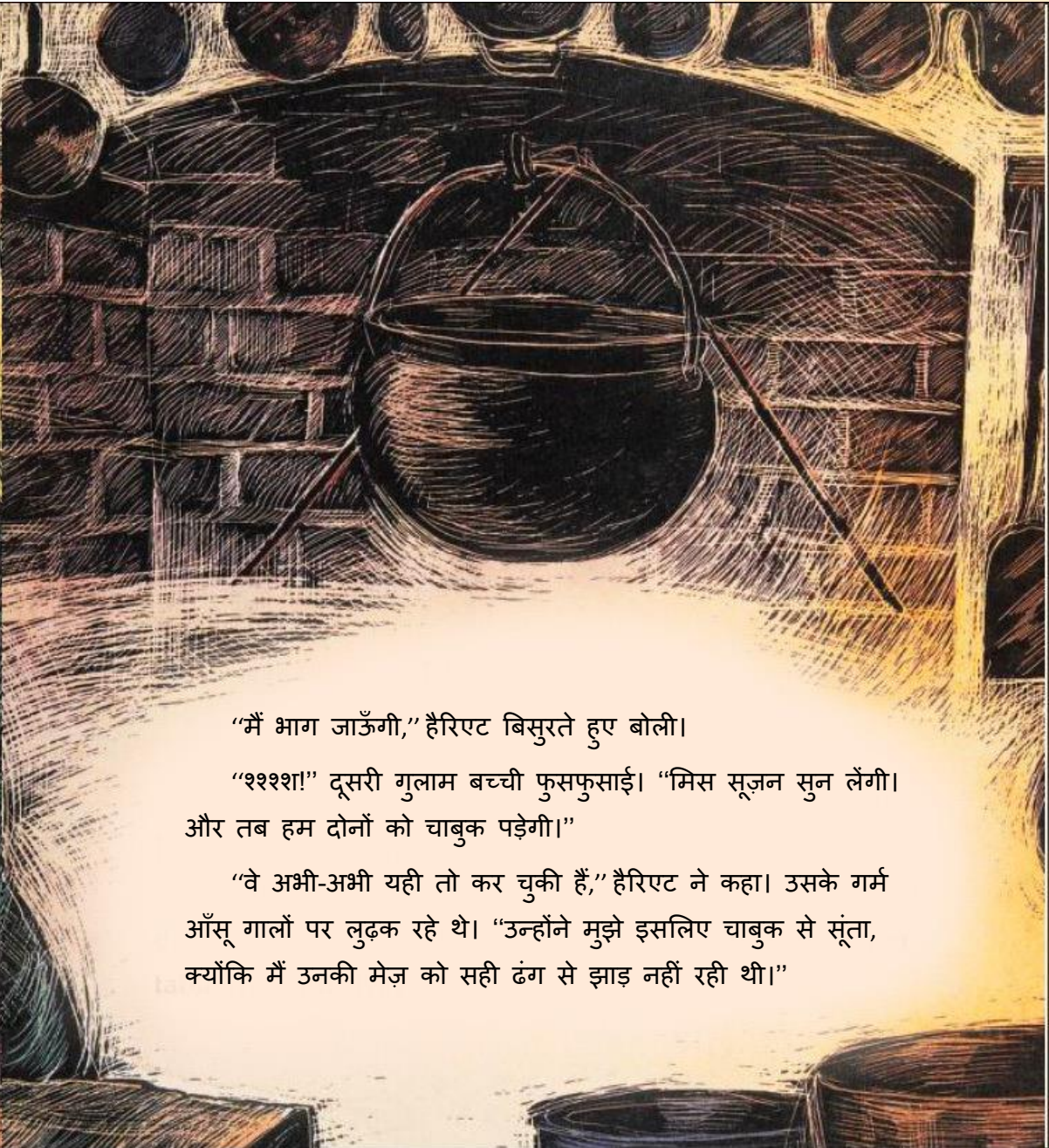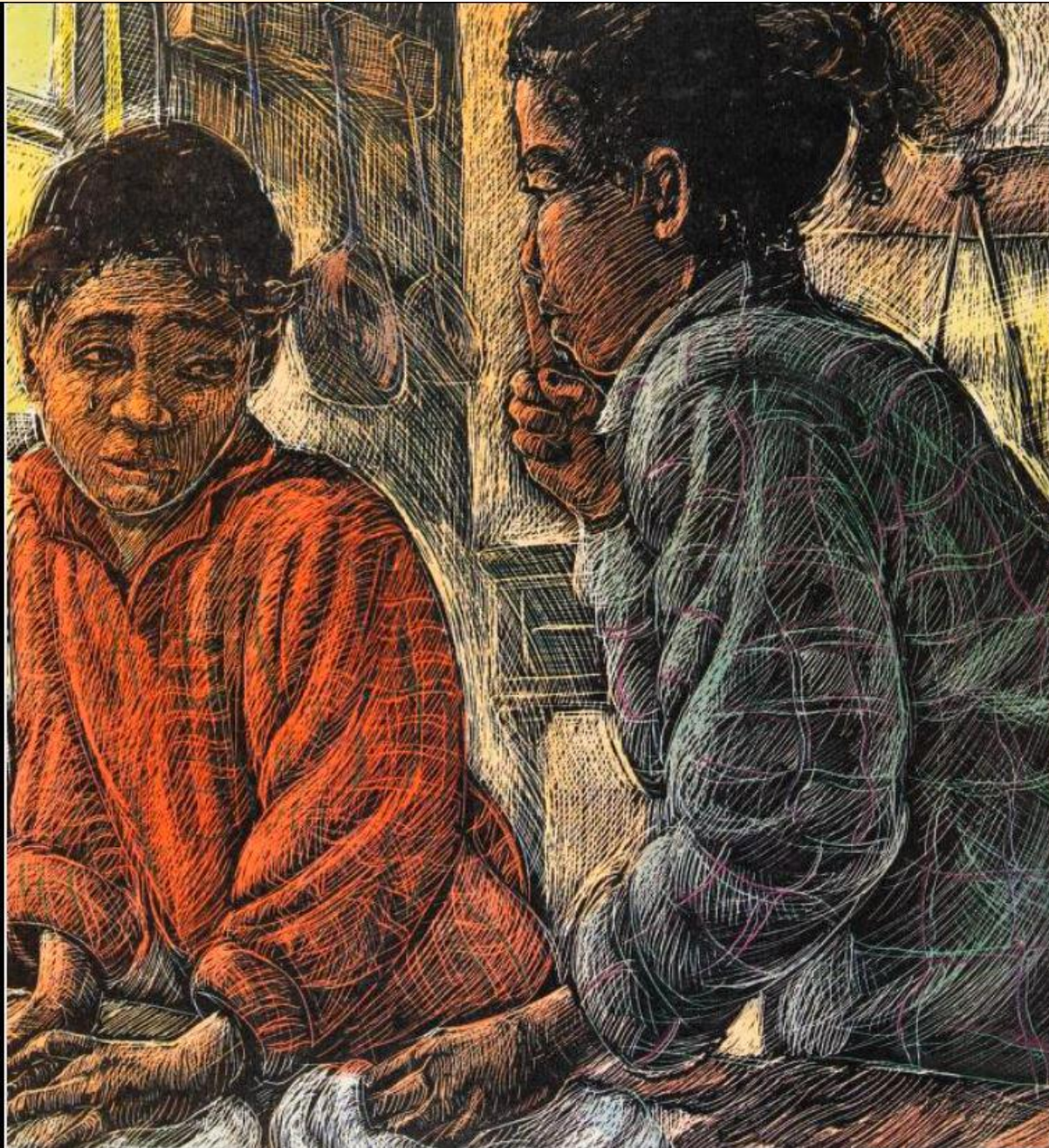
"मैं भाग जाऊँगी," हैरिएट बिसुरते हुए बोली।

"श्श्श्श!" दूसरी गुलाम बच्ची फुसफुसाई। "मिस सूज़न सुन लेंगी। और तब हम दोनों को चाबुक पड़ेगी।"

"वे अभी-अभी यही तो कर चुकी हैं," हैरिएट ने कहा। उसके गर्म आँसू गालों पर लुढ़क रहे थे। "उन्होंने मुझे इसलिए चाबुक से सूंता, क्योंकि मैं उनकी मेज़ को सही ढंग से झाड़ नहीं रही थी।"

"ख़बरदार, मिस सूज़न तुम्हें रोते न देखें। नहीं तो वे फिर से चाबुक चलाएंगी," दूसरी लड़की ने सचेत किया। "अब तुम उनकी गुलाम हो। वे जो चाहे कर सकती हैं। वे तुम्हारे मालिक को पैसे देती हैं। इसलिए अब तुम्हें उनके लिए ही काम करना है।

हैरिएट के मालिक ने उसे मिस सूज़न के लिए काम करने भेज दिया था। पर हैरिएट को अपने परिवार की याद सताती थी। वह खुद को बेहद दुखी और अकेला महसूस कर रही थी।

"ऐ तुम!" मिस सूज़न ने हैरिएट को डपट कर कहा। "बच्चे को सुलाओ।"

हैरिएट को सौंपे गए कामों में एक था नन्हे शिशु को रात भर पालने में झुलाना। अगर वह ज़रा भी रुकती तो बच्चा जग कर रोने लगता। तब हैरिएट को कोड़े पड़ते।

हैरिएट पालना झुलाती। ऐसा करते समय वह अपनी आँखें मूंद लेती। उसे लगता मानो वह अपने माँ-बाप को मक्के के खेत में काम करता देख पा रही है।
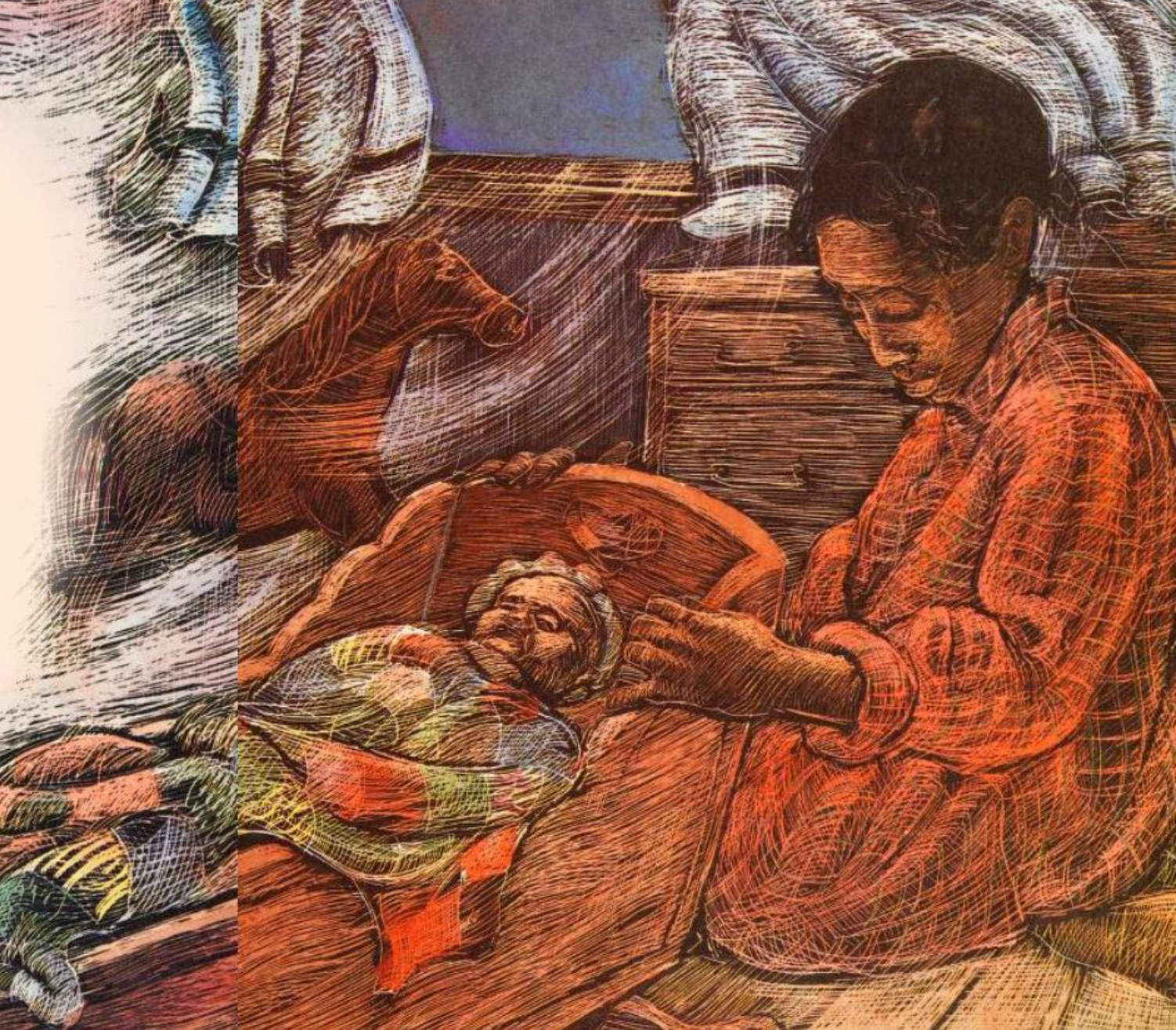
अचानक झटके से हैरिएट की आँखें खुलीं। क्या वह सो गई थी? हाँ, लगभग। शुक्र था वह समय से जग गई और बच्चे को मिस सूज़न को थमा सकी। सुबह जो हो चुकी थी।

हैरिएट भूखी थी। रसोईघर की मेज़ पर एक कटोरे में चीनी के डले रखे थे। उसका हाथ बरबस ही एक डला उठाने को बढ़ा। मिस सूज़न की चौकन्नी नज़रों ने देख लिया। उन्होंने फ़ौरन अपनी चाबुक उठाई। हैरिएट बच कर भागी।
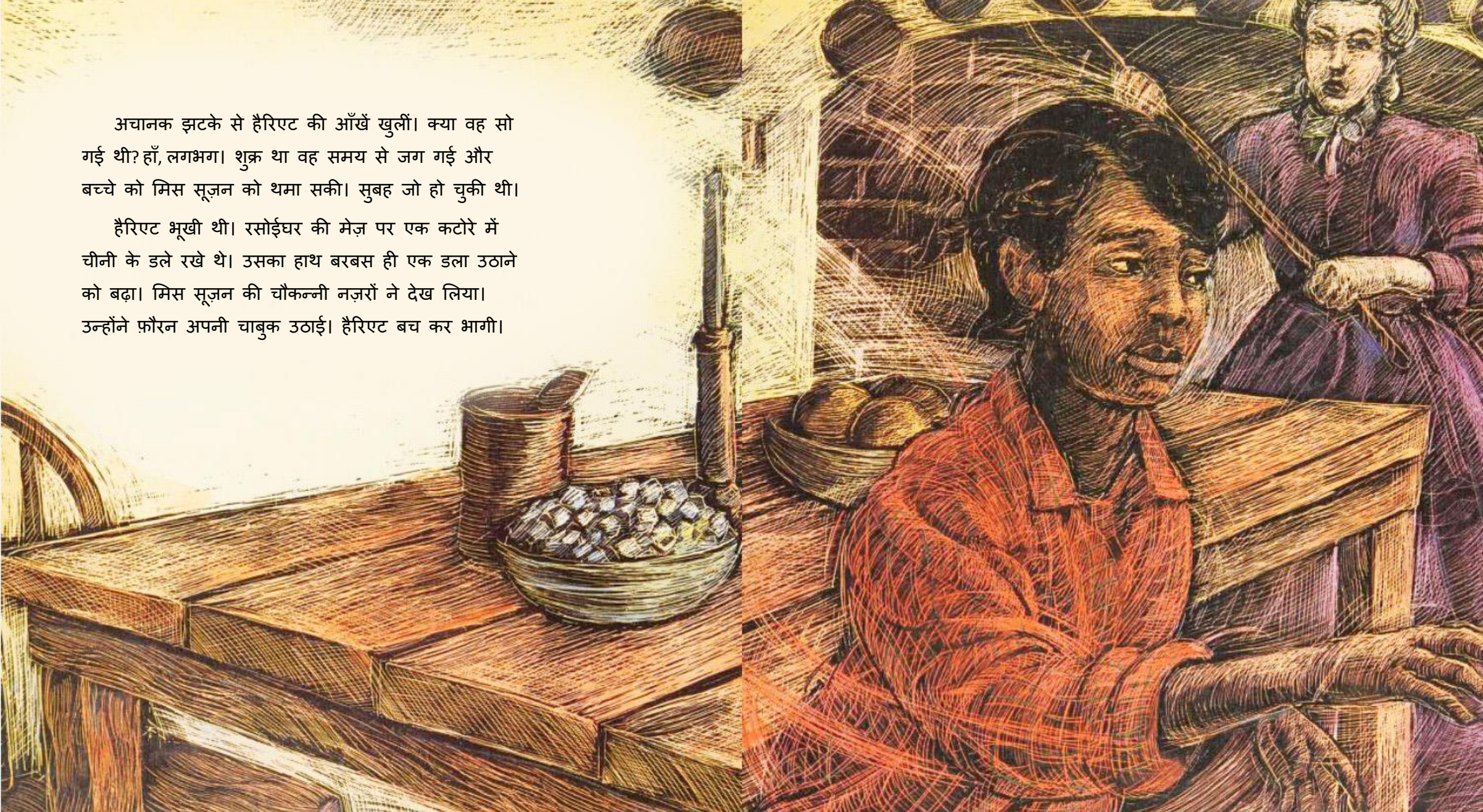
सालों बाद हैरिएट ने मिस सूज़न के घर से भाग निकलने का किस्सा सुनाया।

"मैंने दरवाज़े के पार एक छलांग लगाई। और दौड़ी, तो दौड़ती ही चली गई। कुछ दूर जा एक सूअर का बाड़ा दिख। उसमें एक बूढ़ी मादा सूअर और उसके आठ-दस छोटे बच्चे थे। मैं बाड़ पर चढ़ी और धप्प से अन्दर जा गिरी।

"मैं शुक्रवार से मंगलवार तक वहीं छिपी रही। आलू के छिलकों के लिए उन नन्हे सूअरों से लड़ते-झगड़ते। पर मंगलवार तक भूख ने मुझे इस कदर बेहाल कर दिया कि मुझे समझ आ गया कि अब तो लौटना ही होगा ... हालांकि मैं जानती थी कि मेरा क्या हश्र होगा।"

हैरिएट वापस लौटी। पर वह इतनी कमज़ोर हो गई थी कि काम कर ही नहीं सकती थी। मिस सूज़न ने सज़ा दी। और तब उसे वापस घर भेज दिया।

हैरिएट खुशी से मुस्कुरा दी। सूअरों का बाड़ा बेशक भयंकर था, पर मिस सूज़न से छुटकारा पाना उसे बड़ा ही अच्छा लगा।
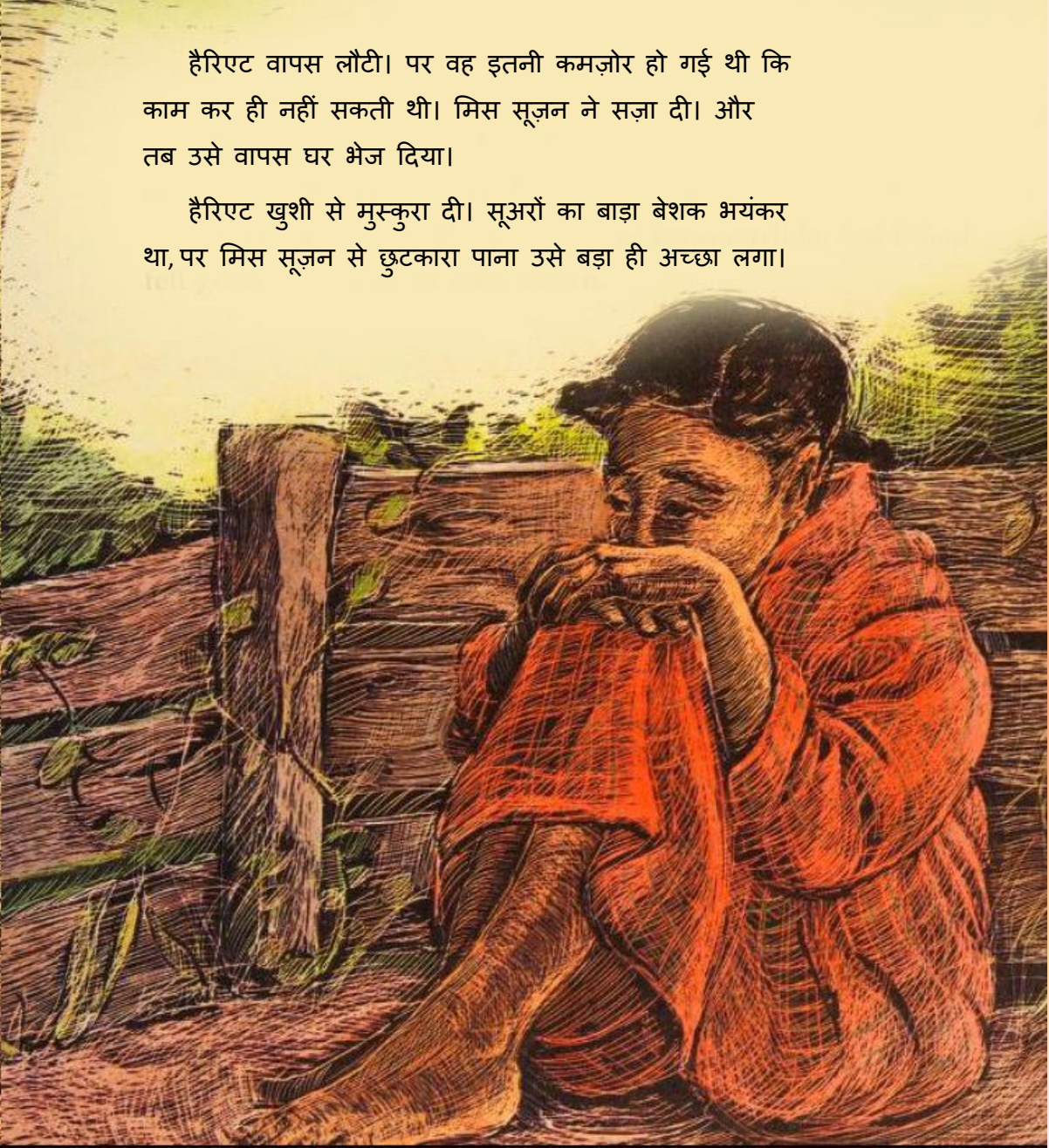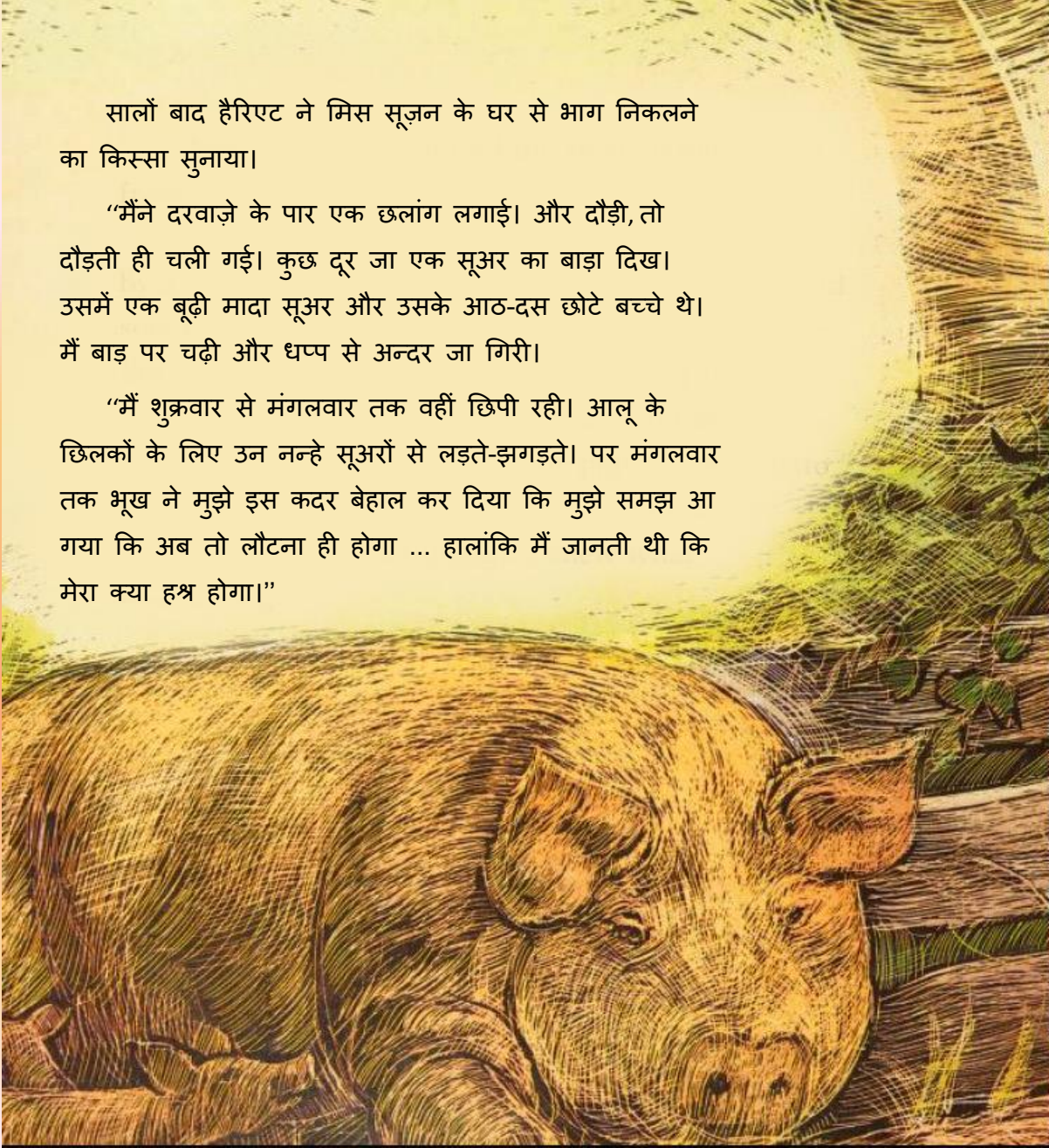
हैरिएट का निकल भागना

हैरिएट ज़िन्दगी भर गुलाम नहीं रहना चाहती थी। "मैं फिर से भागूंगी। पर अगली बार," उसने ऐलान किया, "मैं सूअरों के बाड़े से ज़्यादा दूर जाऊंगी।"

हैरिएट के पिता ने उसे बताया कि गुलाम सिर्फ दक्षिण के राज्यों में हैं। अगर गुलाम भागें और उत्तर में पैन्सिलवेनिया तक पहुँच जाएं, तो वे आज़ाद हो सकते हैं।

"पर भगोड़े गुलामों की धर-पकड़ करने वाले हमेशा चौकन्ने रहते हैं। सो भगोड़ों को दिन में लुक-छिप कर रहना पड़ता है। वे रात को ही उत्तर की दिशा में बढ़ते हैं। ध्रुव तारा उनको सही दिशा दिखाता है," माँ ने फुसफुसा कर हैरिएट को बताया। "भगोड़े अन्डरग्राउन्ड रेलरोड (भूमिगत रेलमार्ग) का इस्तमाल करते हैं।"
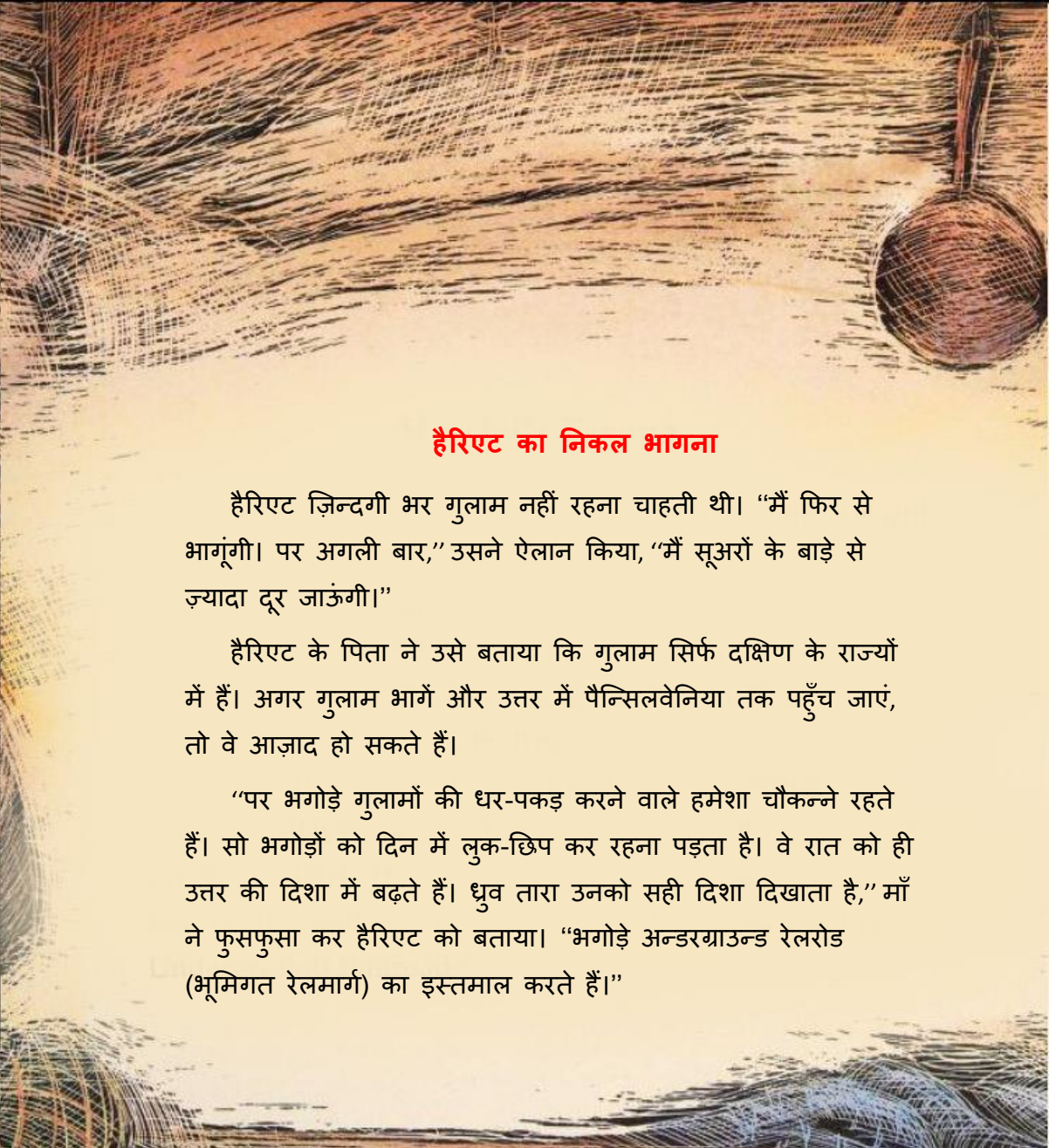
“यह भूमिगत रेलमार्ग भला क्या होता है?” हैरिएट ने जानना चाहा।

जवाब पिता ने दिया, “यह कोई असली रेलमार्ग नहीं है। उत्तर की ओर ले जाने वाले खुफिया रास्तों को ‘अन्डरग्राउन्ड रेलरोड’ कहा जाता है। भगोड़ों की धर-पकड़ करने वालों को इन रास्तों का पता नहीं है। कुछ लोग इन रास्तों से भागने वाले गुलामों की मदद करते हैं। उनके घर ‘स्टेशन’ कहलाते हैं।”

हैरिएट ने सोचा, “हो सकता है कि किसी दिन मैं भी एक सवारी बनूं और भूमिगत रेलमार्ग के सहारे भाग जाऊँ।”

जब हैरिएट चौबीस बरस की हुई उसने उत्तर की ओर निकलने का फैसला किया।

“क्या आप लोग मेरे साथ चलेंगे?” उसने अपने परिवार से पूछा।

वे डरे-सहमे थे। उन्हें मालूम था कि भगोड़े गुलामों को पकड़े जाने पर अक्सर बुरी तरह पीटा जाता है या फिर गोली दाग मार ही डाला जाता है। सो कोई भी हैरिएट के साथ जाने को राज़ी न हुआ।
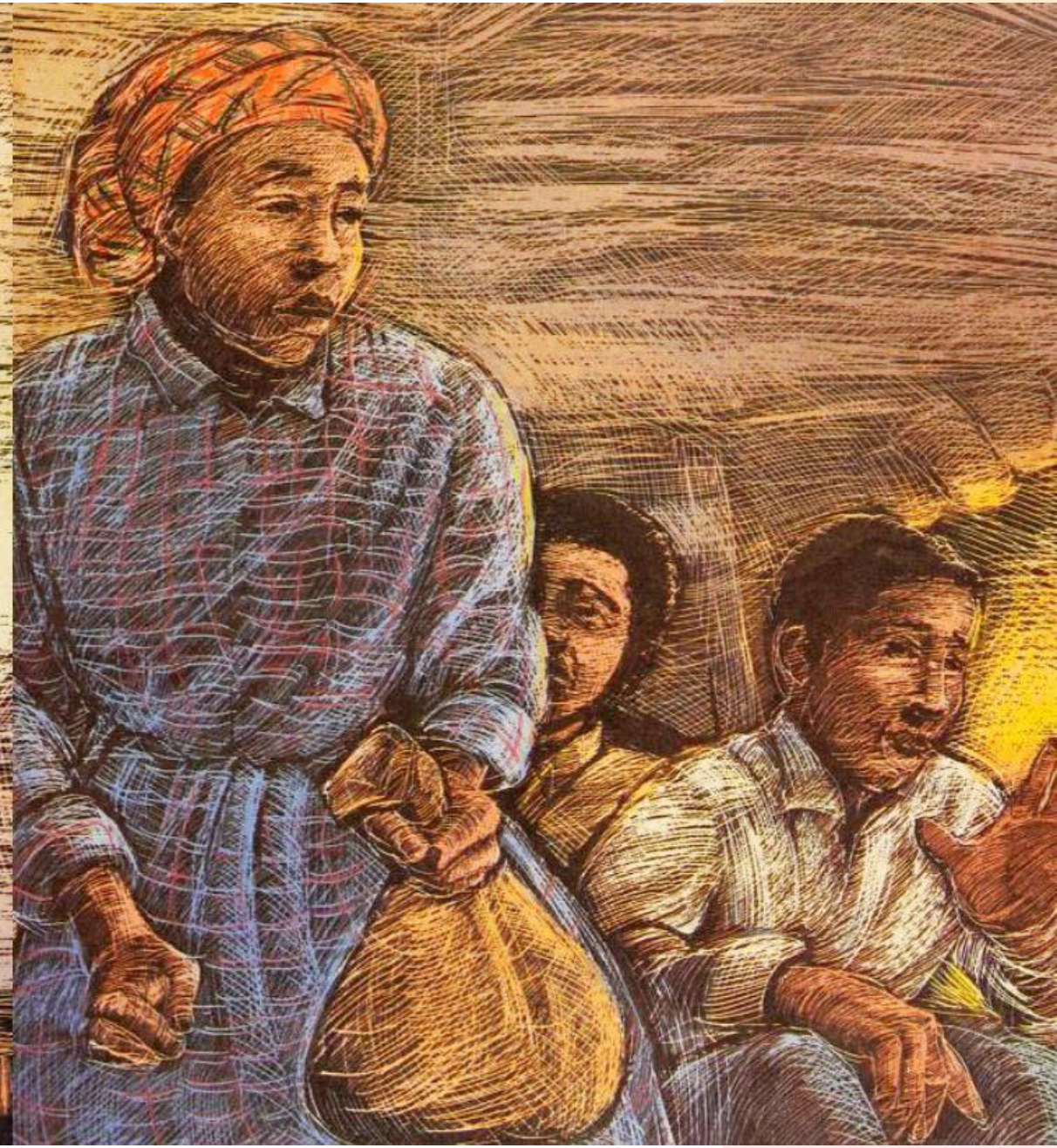
सो हैरिएट अकेली ही निकली। वह पूरी रात चलती रही, जंगल पार बढ़ती रही। ध्रुव तारे ने उसे राह दिखाई।

उसका पहला पड़ाव पास ही बसा बकटाउन था। हैरिएट वहाँ एक औरत को जानती थी। इस औरत ने एक दिन फुसफुसा कर हैरिएट से बात की थी। बताया था कि वह भूमिगत रेलमार्ग की कन्डक्टर है। हैरिएट को पक्का भरोसा था कि वह भागने में ज़रूर मदद करेगी।
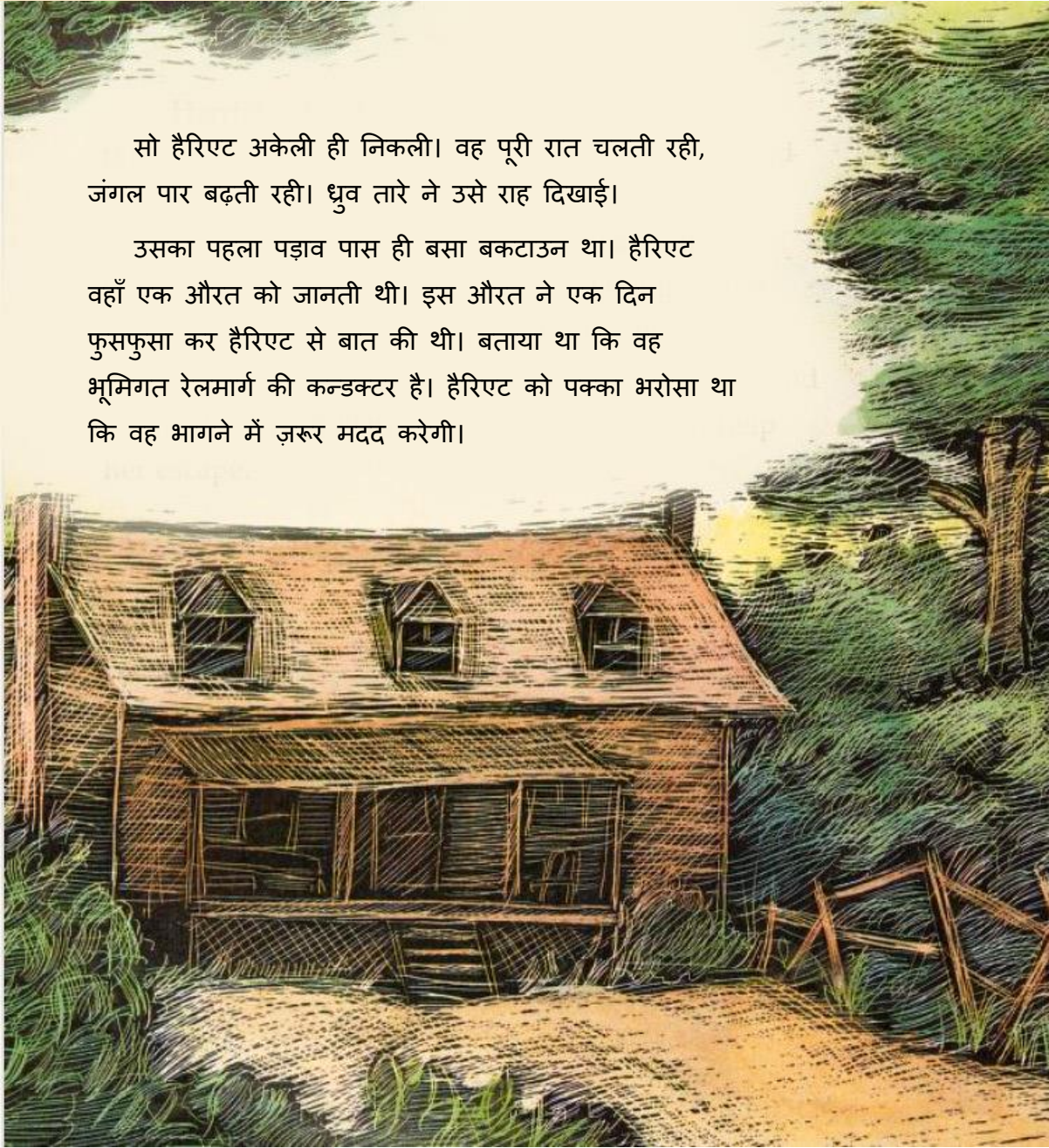
"मैं आ पहुँची हूँ," हैरिएट ने बकटाउन पहुँच उस महिला से कहा। "मैं कल रात घर से भागी थी।"

"जल्दी करो, लो यह झाड़ू पकड़ो और अहाते को बुहारने लगो," उस स्त्री ने कहा। "इससे लोग सोचेंगे कि तुम मेरी ही गुलाम हो। तुम यहाँ महफ़ूज़ रहोगी।"
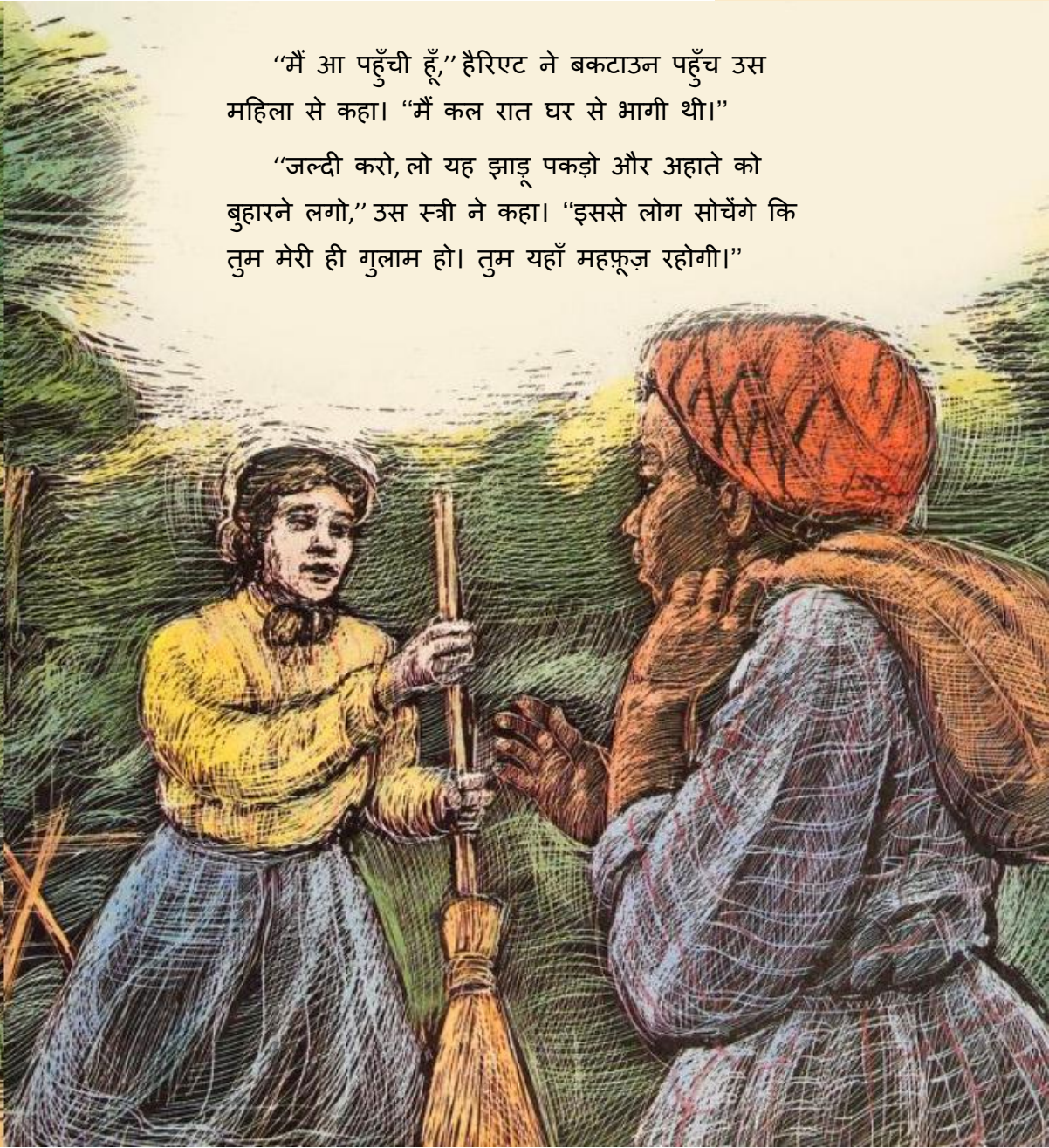
उसी रात उस स्त्री के पति ने हैरिएट को अपनी लद्दू गाड़ी में छिपाया और अगले कस्बे तक पहुँचाया। उसने हैरिएट को यह भी बताया कि वह अगला 'स्टेशन' कैसे खोजे। भूमिगत रेलमार्ग पर हैरिएट का सफ़र शुरू हो चुका था।

अगले कई दिनों तक हैरिएट रात को सफ़र करती। दिन के समय सोती। वह अटारियों, पुआल की ढेरियों या तहख़ानों में लुक-छिप कर सोती।

कभी बादलों से ढके आसमसन में ध्रुव तारा नज़र ही न आता। पर हैरिएट जानती थी कि पेड़ों के जो भाग उत्तर की तरफ होते हैं उन पर काई जम जाती है। सो वह पेड़ों के तनों को टटोलती, काई तलाशती। तब काई उसे उत्तर दिशा का सुराग बता देती।

यों आख़िरकार वह पैन्सिलवेनिया पहुँची। अब वह आज़ाद थी।

"मैंने ध्यान से अपने हाथों को देखा ताकि पता चल सके कि आज़ाद होने के बाद मैं वही इन्सान हूँ भी या नहीं," हैरिएट ने बाद में बताया था। "मुझे लगा मानो सब कुछ एक तेज से दमक रहा था। सूरज खालिस सोने की तरह पेड़ों के बीच और खेतों के ऊपर चमचमा रहा था। मुझे लगा मैं स्वर्ग में हूँ।"
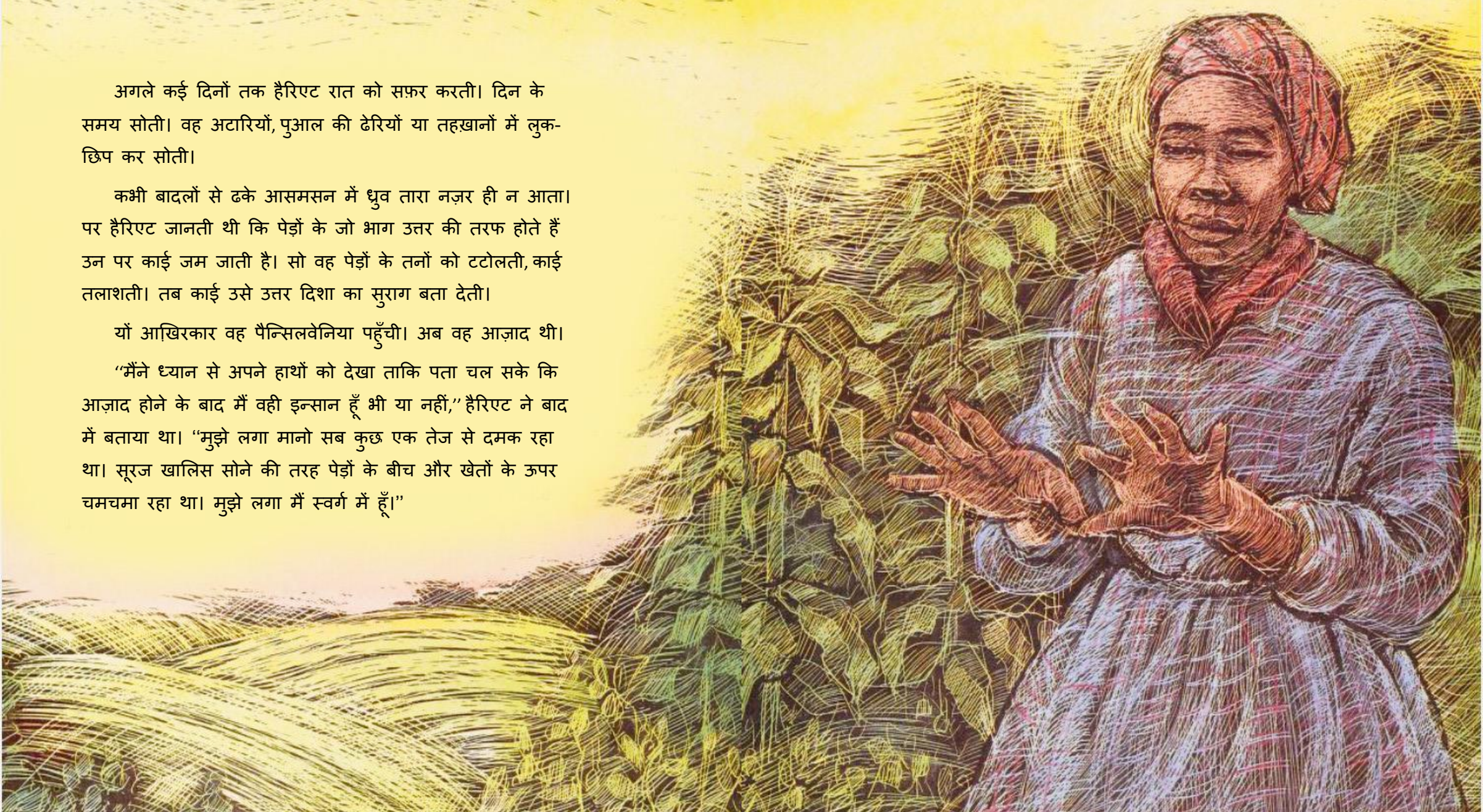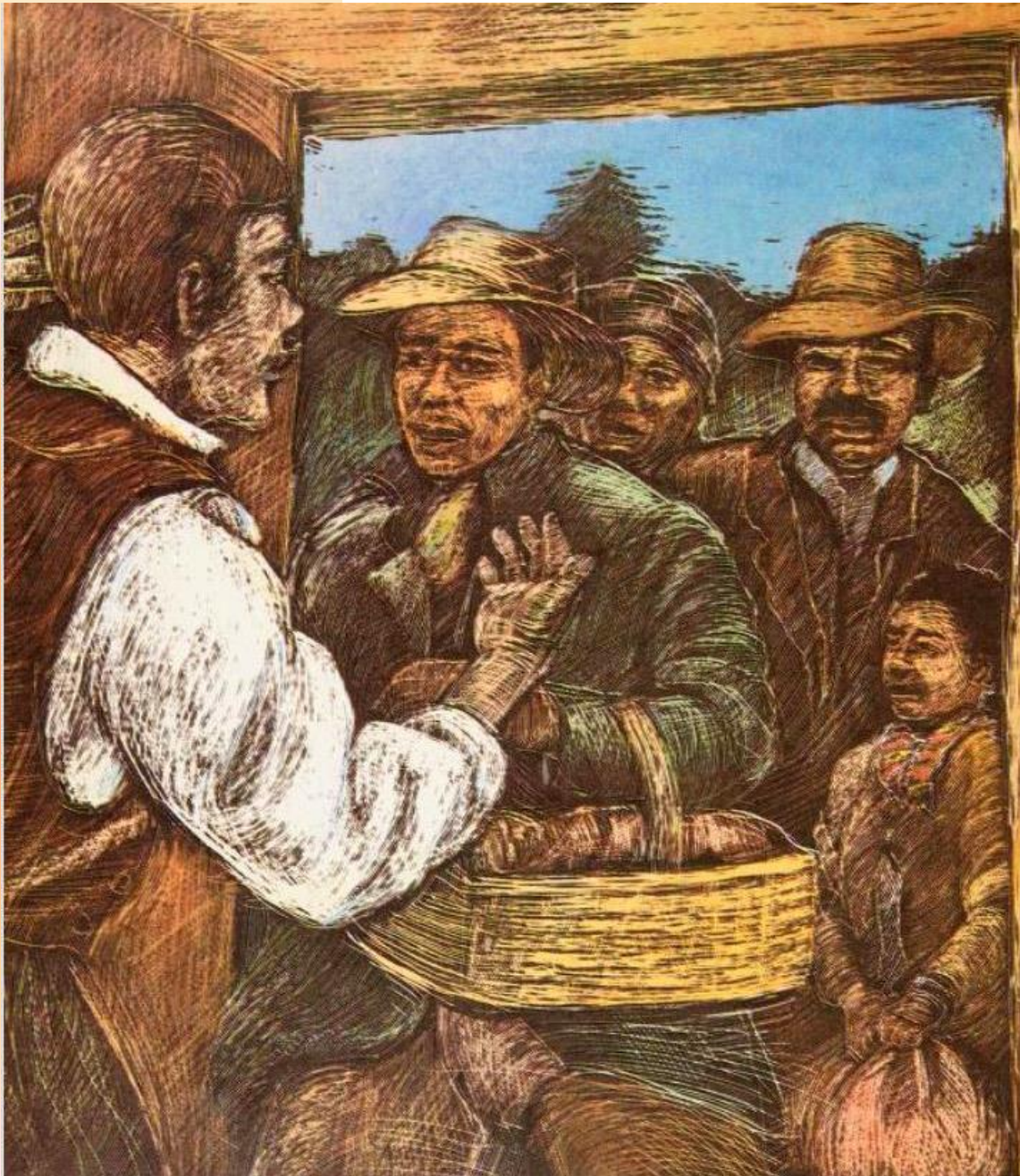
अण्डरग्राउन्ड रेलरोड

“मैं आज़ाद थी,” हैरिएट ने कहा, “पर आज़ाद धरती पर मेरा स्वागत करने वाला कोई था ही नहीं। मेरा घरबार, मेरे बुज़ुर्ग माँ-बाप, भाईयों और बहनों के साथ वहाँ नीचे दक्षिण में रह गया था। पर मैं आज़ाद थी और सोच रही थी कि उन्हें भी आज़ाद होना चाहिए। मैं अब उत्तर में अपना घर बसाऊँगी, और ख़ुदा की मदद से उन सबको वहाँ लाऊँगी।”

हैरिएट यह जानती थी कि भगोड़ों की धर-पकड़ करने वाले हमेशा उस पर नज़र रखते हैं। इसके बावजूद वह अपने परिवार को लिवा लाने वापस दक्षिण लौटी। वह भूमिगत रेलमार्ग का हिस्सा बनी। सबसे पहले वह जिनको आज़ादी की ओर ला सकी वह उसकी बहन और बहन का परिवार था।

पर पैन्सिलवेनिया भी अधिक समय तक सुरक्षित नहीं रहा। गुलामों का एक नया कानून लाया गया। इसके मुताबिक सभी भगोड़े गुलामों को उनके मालिकों को लौटाना ज़रूरी हो गया। यह भी कि जो कोई भगोड़े गुलामों की मदद करेगा उसे कैद की सज़ा दी जाएगी।

"हम अपनी सवारियों को और उत्तर में, कनाडा भेजेंगे," हैरिएट ने गुस्से से कहा। "वे कनाडा में महफ़ूज़ रहेंगे।"

गुलामों के मालिक हैरिएट को रोकना चाहते थे। हैरिएट की जान को हर पल खतरा था। पर वह और-और गुलामों को आज़ाद करवाने दक्षिण को लौटती रही। वह कभी पुरुष का भेस धरती, तो कभी चेहरे को घूंघट से ढकती।
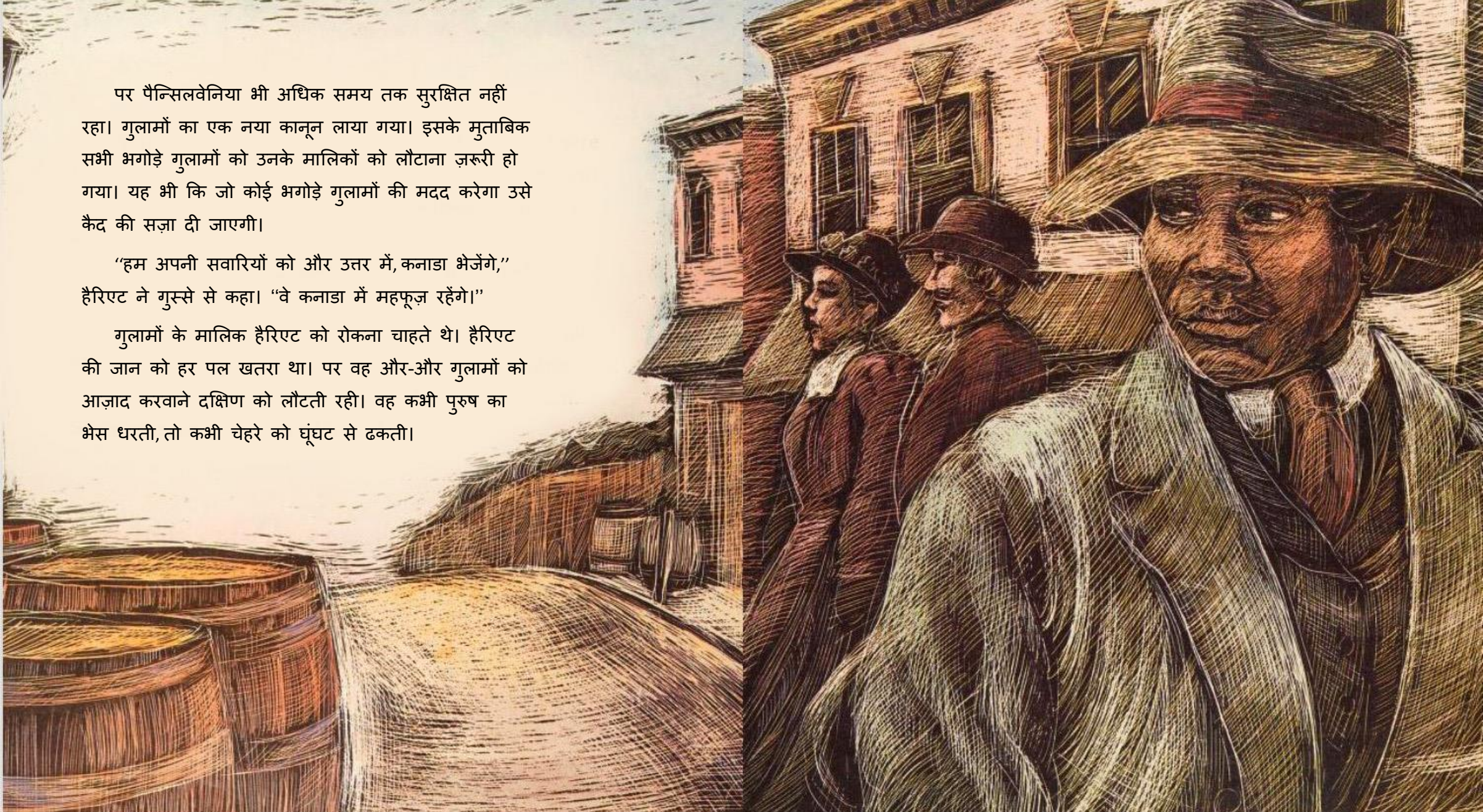
कभी वह भगोड़े गलामों को पकड़ने वालों को उल्लू बनाती। एक बार वह रेल स्टेशन पर बैठी थी। पीछे दीवार पर एक इश्तहार चस्पां था। इश्तहार हैरिएट के बारे में था। उसमें लिखा था कि उसके चेहरे पर चोट का निशान है। यह भी कि जो कोई उसे पकड़वाएगा उसे ईनाम में बड़ी रकम दी जाएगी।

एक व्यक्ति ने हैरिएट की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘‘यह भी तो इश्तहार वाली हो सकती है।

हैरिएट पढ़ना-लिखना नहीं जानती थी, पर उसने एक किताब उठाई और पढ़ने का नाटक करने लगी।

दूसरे आदमी ने यह देख कहा, ‘‘यह इश्तहार वाली औरत नहीं हो सकती। उसमें साफ लिखा है कि वह पढ़-लिख नहीं सकती।’’
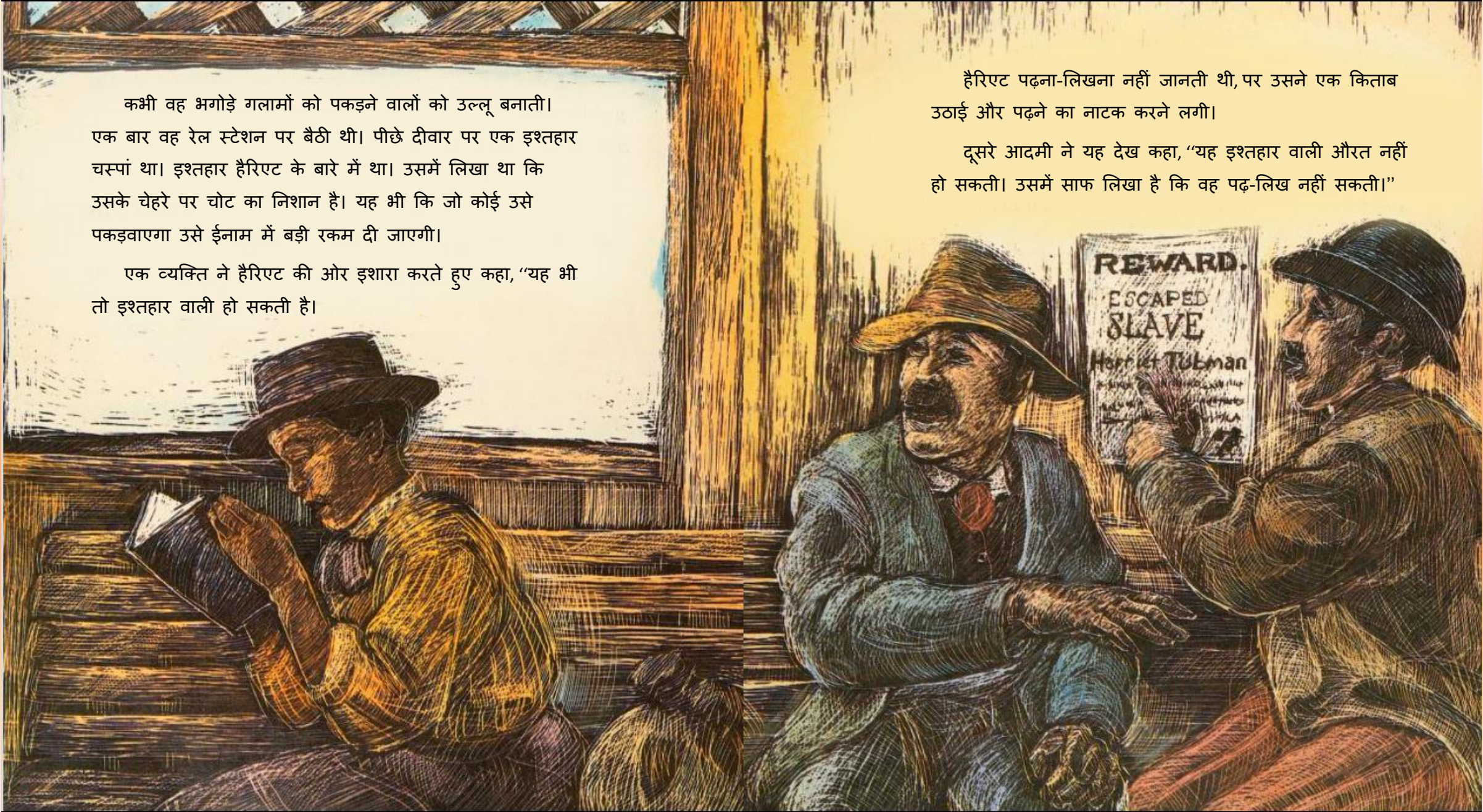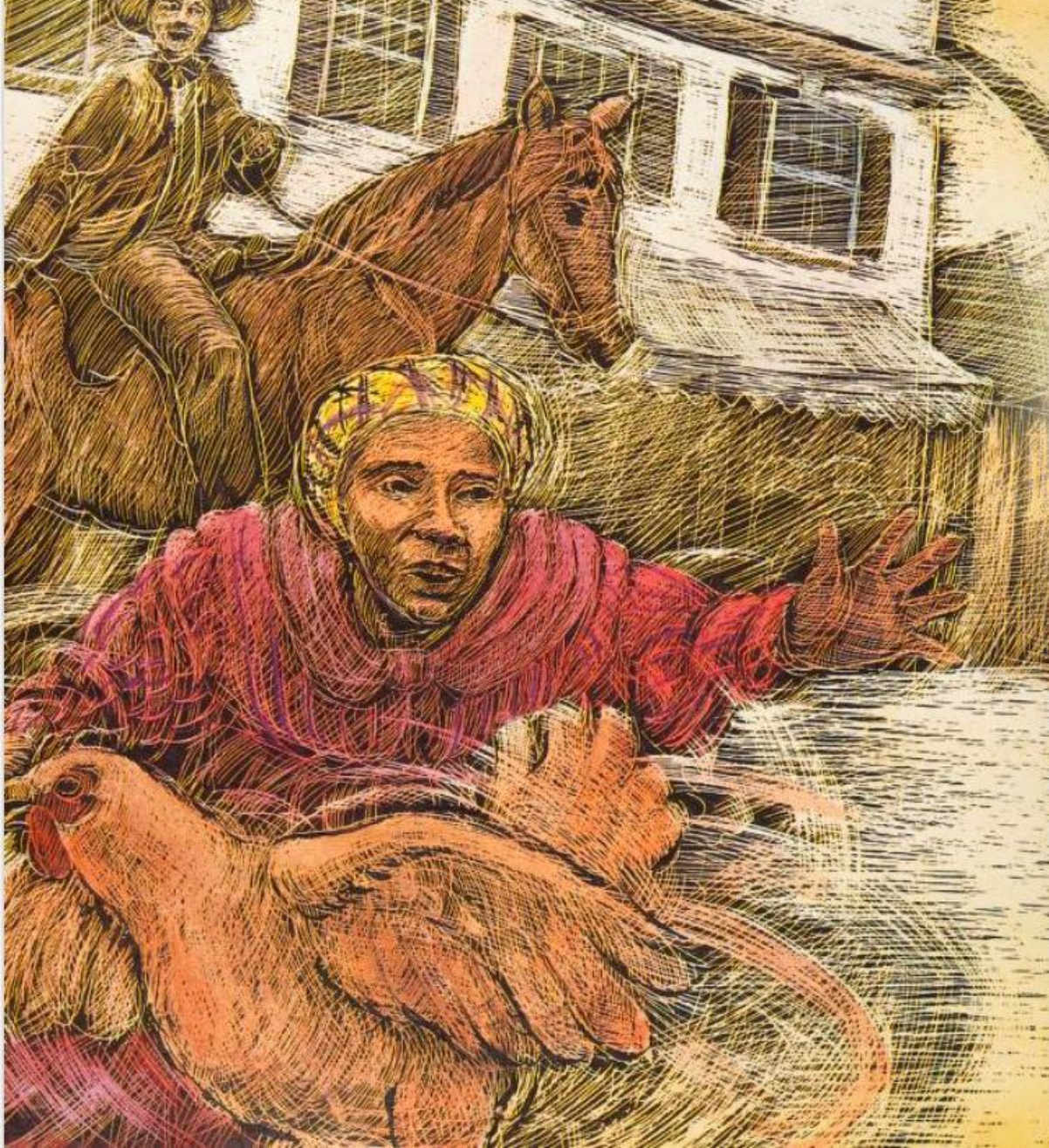
एक बार हैरिएट सड़क पर जा रही थी कि उसे अचानक अपना पुराना मालिक नज़र आया। उसे तुरत-फुरत बचाव का रास्ता सोचना था।

उसने अपने हाथों में थामी मुर्गी छोड़ दी। तब नीचे झुक कर उसका पीछा करने लगी। मुर्गी इधर-उधर, गोल-गोल घूमती रही, उसके पीछे सिर झुकाए हैरिएट भी। उसका पुराना मालिक ठहाके लगा हंसता रहा। उसने एक बार भी हैरिएट का चेहरा नहीं देखा। वह तो मुर्गी का तमाशा देख रहा था।

हैरिएट ने अण्डरग्राउन्ड रेलरोड के ज़रिए तीन सौ से भी ज़्यादा गुलामों को छुड़ाया।

''मेरे भूमिगत रेलमार्ग में मेरी रेलगाड़ी कभी पटरी से नहीं उतरी। न ही कभी मैंने अपनी एक भी सवारी खोई,'' वह फक्र से कहती। हैरिएट कभी पकड़ी नहीं गई।
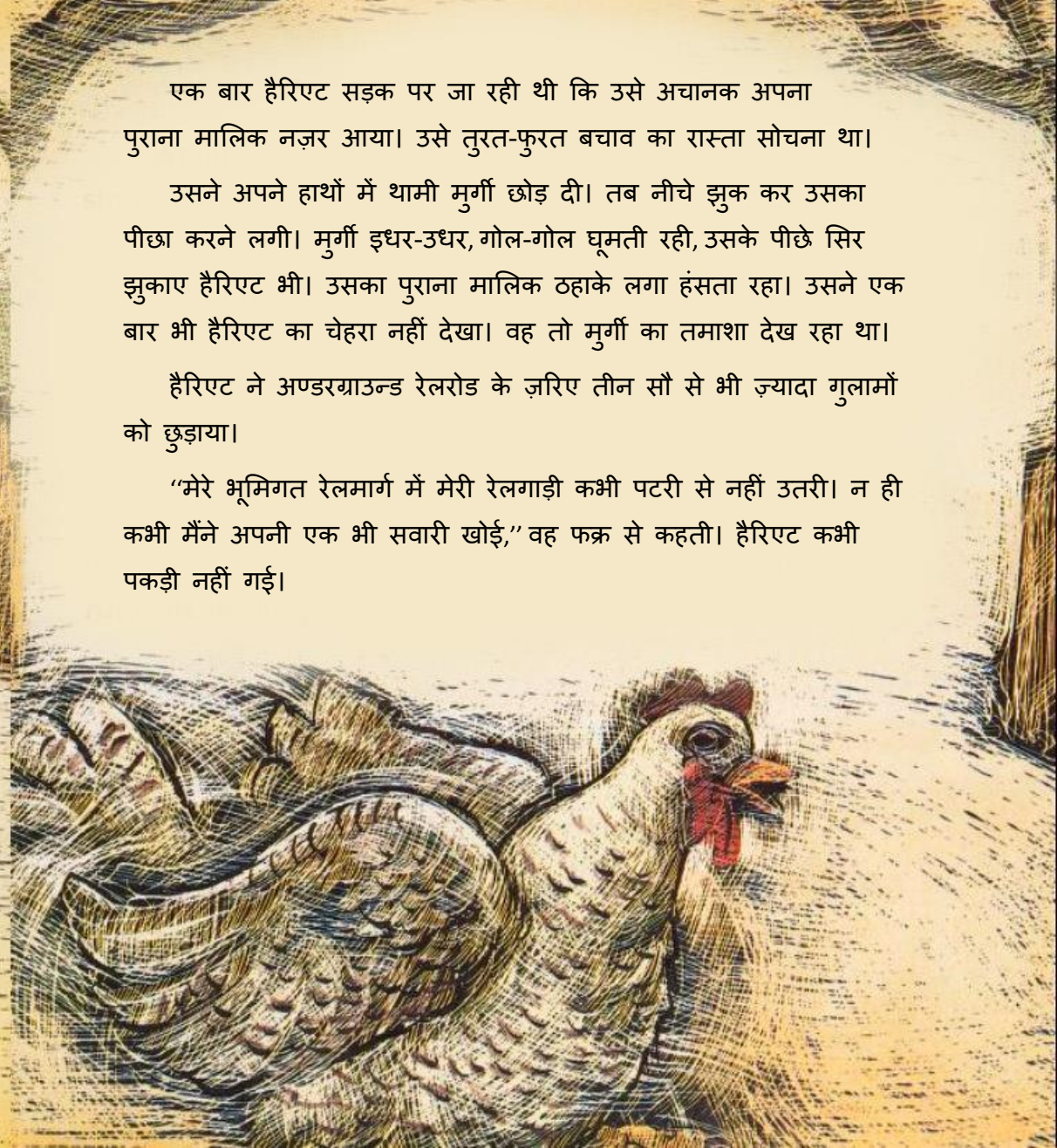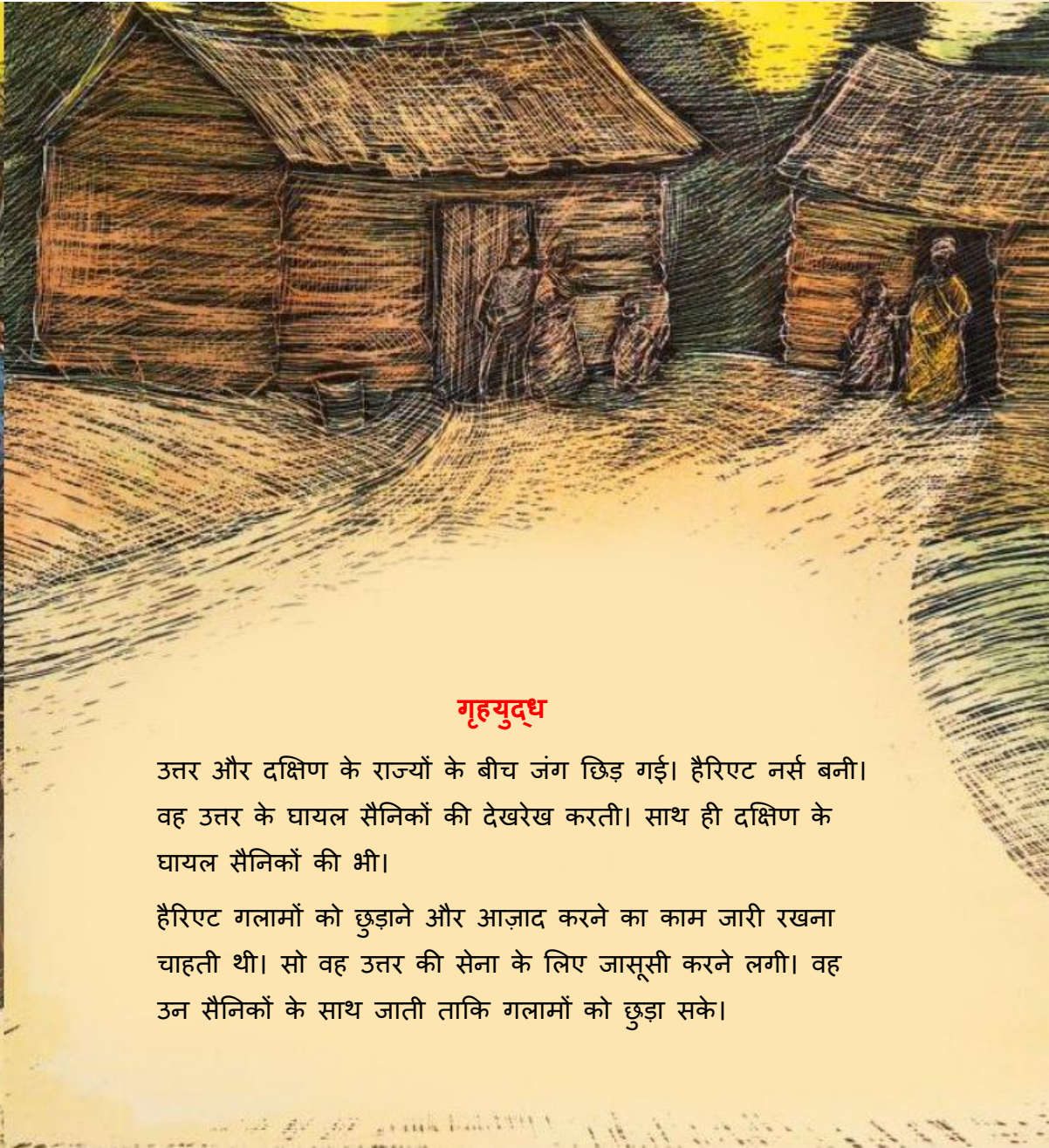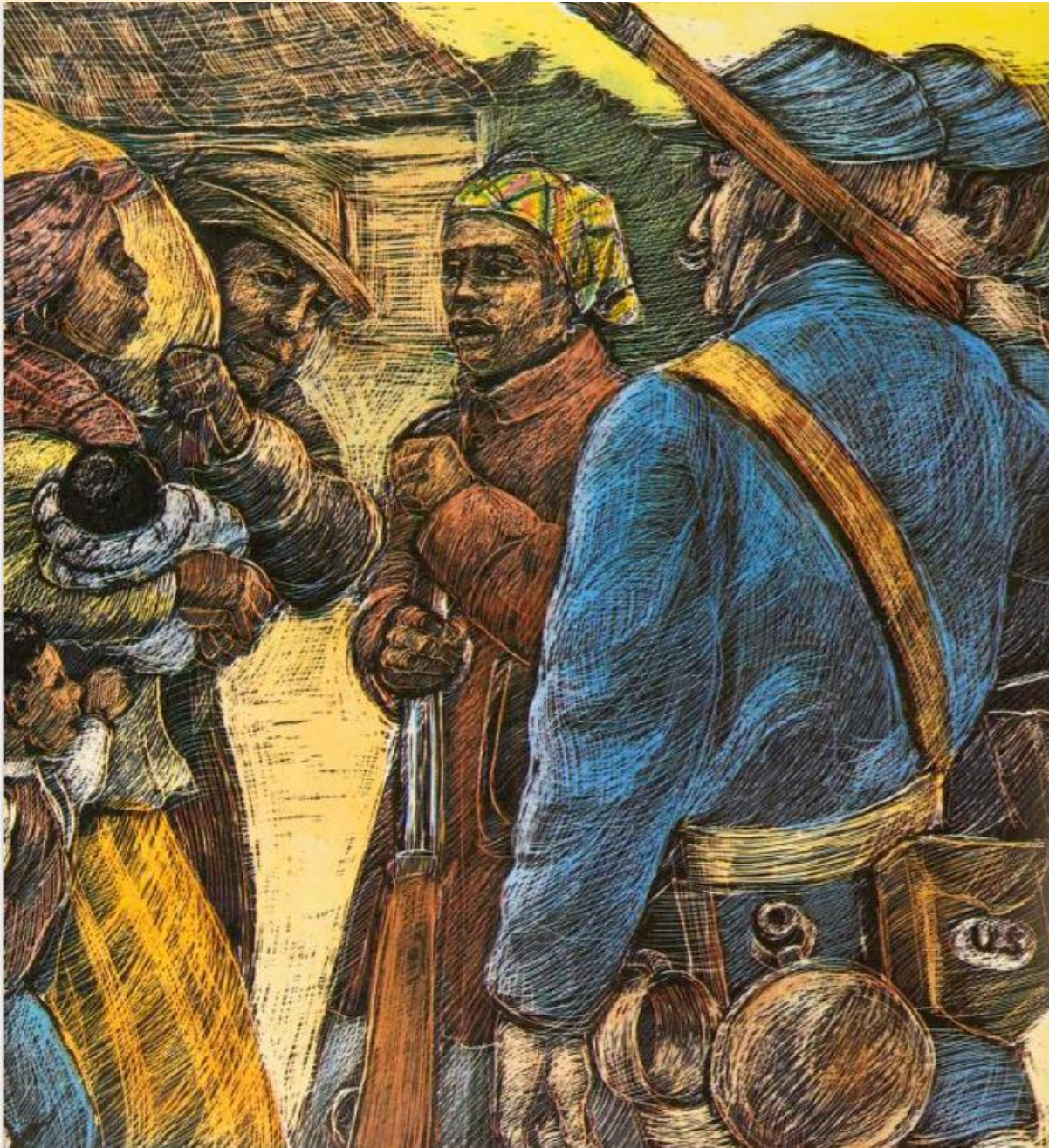
गृहयुद्ध

उत्तर और दक्षिण के राज्यों के बीच जंग छिड़ गई। हैरिएट नर्स बनी। वह उत्तर के घायल सैनिकों की देखरेख करती। साथ ही दक्षिण के घायल सैनिकों की भी।

हैरिएट गलामों को छुड़ाने और आज़ाद करने का काम जारी रखना चाहती थी। सो वह उत्तर की सेना के लिए जासूसी करने लगी। वह उन सैनिकों के साथ जाती ताकि गलामों को छुड़ा सके।
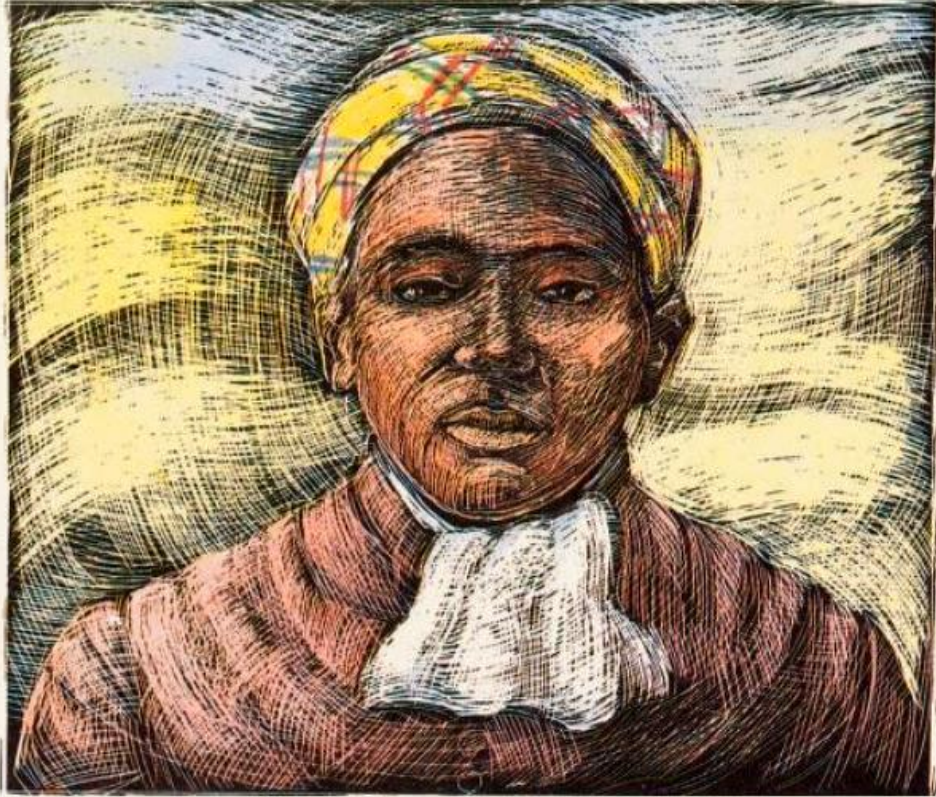
चार वर्ष बाद जंग में उत्तर की जीत हुई। गुलामी खत्म करने का ऐलान किया गया। अब सभी गुलाम "हमेशा के लिए आज़ाद" थे।

हैरिएट आज़ादी का प्रतीक बन गई। वह जो वाज़िब मानती थी उसके लिए लड़ी। और उसने अपनी यह लड़ाई जीती।